Seventeenth Loksabha

an>

Title: Need to Refurbish the Historical National School, Darbhanga, Bihar and to declare it as a National Heritage

श्री गोपाल जी ठाकुर (दरभंगा): राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रेरणा 1920 ई. में पूरे भारत वर्ष में असहयोग आदोलन के क्रम में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई थी। देश के प्रथम चरण में स्थापित पांच राष्ट्रीय विद्यालयों में दरभंगा शहर के लालबाग मुहल्ला स्थित विद्यालय भी शामिल था। इसकी स्थापना हुए 100 वर्ष से अधिक का समय हो गया है। उल्लेखनीय है कि इसके संस्थापक स्वर्गीय कमलेश्वरीचरण सिन्हा के कहने पर इसी स्कूल के प्रांगण में 1927 ई. में महात्मा गांधी ने अनाथालय की स्थापना की थी। स्वतंत्रता आंदोलन के क्रम में यह विद्यालय एवं अनाथालय स्वतंत्रता सेनानियों का केन्द्र बन गया। महान इतिहासकार काली किंकर दत्त के फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार पुस्तक में इसका उल्लेख विशेष रूप से मिलता है। इसके अलावा कई ऐतिहासिक दस्तावेजों में नेशनल स्कूल, दरभंगा का जिक्र मिलता है। अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लेने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर चलाए जा रहे आंदोलनों में उत्तर बिहार का यह प्रमुख केन्द्र रहा है। 1934 ई. में आए भूकम्प में भी यहां महात्मा गांधी की योजना के अनुसार कैम्प चलाया गया। इस स्कूल में रहने वाले मातृका प्रसाद कोईराला, विशेश्वर प्रसाद, गिरिजा प्रसाद कोईराला नेपाल के प्रधानमंत्री हुए।वहीं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर, पंडित कुलानंद वैदिक, गोपाल जी शास्त्री, यदुनंदन शर्मा, राधा नंदन झा, नीलामबर चौधरी, भूप नारायण झा सहित कई प्रमुख लोगों ने इस परिसर में आश्रय पाया एवं अपने शैक्षणिक, राजनीतिक और सामाजिक क्रिया-कलापों को परवान चढाया। अनेक विधायक, विधान पार्षद के साथ- साथ दरभंगा के प्रथम सांसद श्रीनारायण दास भी इस स्कूल से जुड़े थे। स्कूल के संस्थापक कमलेश्वरीचरण सिन्हा के सानिध्य में रह कर पं. रामनंदन मिश्र ने यही युवक संघ की स्थापना की थी। स्वतंत्रता आंदोलन के काल खंड में स्वतंत्रता सेनानियों के खुले एवं गुप्त बैठकों का साक्षी रहा यह स्थल आज

नशेड़ियों और समाज विरोधी गतिविधि के लिए उपयोग में आ रहा है। इस परिसर का चारों ओर अवैध कब्जा करके अनैतिक व्यवसायिक इस्तेमाल किया जा रहा है। आज देश की यह राष्ट्रीय धरोहर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है और निश्चित रूप से खंडहर बने इस परिसर को भूलना अपने इतिहास एवं संघर्ष को भूलने जैसा है। देश के प्रथम महामहिम राष्ट्रपति के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी दो बार इस विद्यालय के प्रांगण में आ चुके हैं। इसके प्रांगण में राष्ट्रपति महोदय के समक्ष शहीद स्मारक का शिलान्यास महामहिम के आदेश पर कमलेश्वरीचरण सिन्हा ने किया था। इसलिए मैं अपनी सरकार से मांग करता हूँ कि इस स्थल के पुनरुद्धार की मांग दशकों से हो रही है। अतः इस ऐतिहासिक स्थल को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया जाय ।